वसुंधरा समाचार

जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन का मुखपत्र

वर्ष 1, अंक 1

अप्रैल 2023

वसुंधरा पुस्तक केंद्र, जयपुर

हमारे बारे में

'वसुंधरा' एक व्यापक सांस्कृतिक मंच है—**साहित्य, कला, रंगमंच और सिनेमा** का!

हमारे पवई (मुंबई) और आदर्श नगर (जयपुर) स्थित पुस्तक केन्द्रों में आप हिंदी, अंग्रेज़ी और मराठी की उत्कृष्ट पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीद और पढ़ सकते हैं। यहाँ आपको उपन्यास-कहानी, कविता और नाटक के अलावा सिनेमा, रंगमंच, यात्रा, दर्शन, धर्म, शायरी, हास्य-व्यंग, पर्यावरण, इतिहास, लैंगिक समानता, समसामयिक सामाजिक-राजनीतिक, भोजन, स्वास्थ्य आदि आदि पर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों का एक समृद्ध और विविध संग्रह मिलेगा, जिसमें क्लासिक्स के साथ-साथ नवीनतम पुरस्कृत पुस्तकें शामिल हैं। **इन्हें आप हमारे पुस्तक केन्द्रों के अलावा व्हाट्सएप/वेबसाइट से घर बैठे भी मंगा सकते हैं।**

हम पोस्टर भी स्टॉक करते हैं। जूनियर पाठकों के लिए हमारे विशेष खंड में सभी उम्र के बच्चों के लिए किताबें और गतिविधि पुस्तिकाएं मिलेंगी। एक नीति के तहत हम सभी पुस्तकों पर न्यूनतम छूट देने के अलावा समय-समय पर **विशेष ऑफर** भी घोषित करते हैं। यदि संयोगवश आपकी पसंद की कोई पुस्तक हमारे पास नहीं है तो हम उसे आपके लिए यथाशीघ्र मंगवाने की व्यवस्था करेंगे।

'वसुंधरा' अपने केन्द्रों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कविता-कहानी पाठ, संगीत, चर्चाओं आदि का भी आयोजन करती हैं। जयपुर केंद्र में स्थित पंजीकृत सांस्कृतिक सोसाइटी 'वसुंधरा मंच' विविध सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा अपने सदस्यों के लिए भारत और विश्व की उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन भी करती है। इन गतिविधियों की ताज़ा जानकारी आप **'वसुंधरा समाचार'** से प्राप्त कर सकते हैं।

अगर पुस्तकों और सांस्कृतिक गतिविधियों में आपकी रुचि है तो 'वसुंधरा' आएं और इन प्रगतिकामी प्रयासों में हमारे हिस्सेदार बनें। हम आपको **'वसुंधरा बुक क्लब'** और **'वसुंधरा मंच'** का सदस्य बनने के लिए भी आमंत्रित करते हैं। आपकी जानकारी के लिए **'जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन'** एक **गैर-लाभकारी** संस्था है।

Vasundhara Store, Mumbai

About Us

'Vasundhara' is a multi-locational cultural forum dedicated to literature, arts, theater and cinema.

At our innovative book stores located at Powai (Mumbai) and Adarsh Nagar(Jaipur), we stock books in Hindi, English and Marathi on diverse subjects including fiction, poetry, drama, philosophy, religion, travel, environment, recreation, history, current affairs, gender equality, health, food etc. etc. by international authors as well as writers from Indian languages, including classics as well as current prize winning titles.

We offer **attractive discounts** on all books, offer special offers from time to time and also deliver books at your doorstep through our website. Our section for junior readers offers books and activity books for children of all ages. If your desired title is not available with us, we will arrange to procure it for you as soon as possible.

'Vasundhara' is also engaged in organizing cultural programmes, literature readings, talks and music related activities. Our registered society ***'Vasundhara Manch'*** also arranges film screenings of artistic world and Indian cinema at Jaipur. Our bulletin ***'Vasundhara Samachar'*** details these activities.

If you have a passion for books and related cultural activities, do join us and participate in activities of *'Vasundhara'*. **We also invite you to take membership of *'Vasundhara Manch'* and *'Vasundhara Book Club'*.**

'Jan Vasundhara Sahitya Foundation' is a non-profit organization. All donations to Jan Vasundhara Sahitya Foundation qualify for Income Tax rebate under Section 80G of Income Tax.

इस महीने की पुस्तकें – हमारा चुनाव
Vasundhara Recommendations of the Month

Annie Ernaux

Nobel Prize Winner for Literature – 2022

1901 से आरम्भ होकर आज तक के 122 वर्षों के इतिहास में फ्रांस ने साहित्य में सबसे अधिक 16 नोबेल पुरस्कार जीते हैं लेकिन यहाँ भी जहां *ज्यां-पॉल सार्त्र* को यह पुरस्कार मिला, वहीं उनके ही या कदाचित उनसे बड़े साहित्यिक कद की साथी लेखिका *सिमोन द बुवा* को नज़रंदाज़ कर दिया गया. ऐसे में नोबेल के इस 122 वें वर्ष में इस पुरस्कार के लिए फ्रांस की पहली लेखिका 82 वर्षीय *ऐनी एरनौ* के नाम की घोषणा विशेष अर्थ रखती है.

ऐनी एरनौ को पिछले कई दशकों से 'फ्रांस की सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक आवाज़' माना जाता रहा है। लेकिन तब फ्रांस के बाहर बहुत कम लोग ही उन्हें पहचानते थे। उन्होंने 1974 में लिखना शुरु किया था, लेकिन उनकी किसी पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद इससे सोलह वर्ष बाद आया।

ऐनी एरनौ के व्यक्तिगत जीवन को जानना आह्लादकारी है क्योंकि वे किसी संभ्रांत घराने की जगह एक गरीब और अत्यंत साधारण कामकाजी- कृषक परिवार से आयी हैं, जहां उनके माता-पिता फ्रांस के एक श्रमिक मोहल्ले में छोटी सी परचून और कॉफ़ी की दुकान चलाते थे और उनके चाचा-चाची खेतों में मजदूरी करते या अमीर घरानों में नौकरानियों का काम करते थे। खुद *एरनौ* ने बीस वर्ष की आयु में जीविका कमाने के लिए लन्दन में एक परिवार में ऐसी ही नौकरी की थी। फिर बाद में उन्होंने साहित्य की डिग्री प्राप्त की और बरसों शिक्षिका रहने के बाद वे फ्रांस के राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा संस्थान में कार्यरत रही।

वंचितों और दलितों द्वारा लिखी आत्मकथाओं की तरह *ऐनी एरनौ* का आत्मकथात्मक गद्य अपने प्रामाणिक निम्न मध्यवर्गीय अनुभव के कारण अलग से पहचान में आता है।

गरीबी के क्षय से लड़ते हुए आत्मसम्मान के साथ उससे उबरने का संघर्ष उनकी लगभग हर रचना में दिखाई देगा और एक सीमा से आगे यह उनकी लड़ाई का मुख्य उद्देश्य बन जाता है। *ऐनी एरनौ* की इन रचनाओं में आप उनके परिवार की सामाजिक यात्रा, छोटे से गाँव में बड़ा होने के अनुभवों, माता-पिता से संबंधों, विवाह, एबॉर्शन, अल्ज़ाइमर रोग, मां की मृत्यु और कैंसर के बारे में उनके जीवन के विविध अन्तरंग अनुभवों को बारीकी से जान सकते है। उनकी स्मृतियाँ उनकी विराट संपत्ति हैं। *ओसिप गेंदलश्ताम* ने कहा था कि 'जो याद रखता है, उसे हम आविष्कारक मान सकते हैं!' *ऐनी एरनौ* अपनी इन सुपरिचित और कई जगह दोहराई जाने वाली स्मृतियों से हर बार एक नया, स्वतःस्फूर्त संसार रचती हैं। इनमें नाटकीयता न होते हुए गज़ब की रवानगी है और अपनी सहजता तथा प्रामाणिकता में ये स्मृतियाँ हमें हर बार, बार-बार मुग्ध करती हैं।

उन्हें नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा ने उनके उस 'साहस को सराहा है जिसमें वे व्यक्तिगत स्मृति को व्यापक स्वरूप प्रदान कर उसकी जड़ों तक पहुँचती हैं!' नोबेल पुरस्कार समिति के अध्यक्ष *ऐन्द्रे ओल्सन* के अनुसार 'वे एक विलक्षण लेखिका हैं जिन्होंने अपने लेखन में अपनी सांस्कृतिक परम्परा के साथ-साथ छोटी जगहों पर रहने वाले गरीब, स्वाभिमानी लोगों को बेहद ईमानदारी और सहजता के साथ पुनर्जीवित किया है!'

– जितेन्द्र भाटिया

I had written in my diary sixty years ago-"I will write to avenge my people!" It echoed Rimbaud's cry-"I am of an inferior race for all eternity". I was 22, studying literature in a provincial faculty with the daughters and sons of the local bourgeoisie for the most part. I proudly and naively believed that writing books, becoming a writer, as the last in the line of landless labourers, factory workers and shopkeepers, people despised for their manners, their accent, their lack of education, would be enough to redress the social justice linked to social class at birth. That an individual victory could erase centuries of domination and poverty, an illusion that school had already fostered in me by dint of my academic success. How could my personal achievement have redeemed any of the humiliations and offences suffered? That's not a question I ever asked myself. I had a few excuses. By choosing literary studies, I elected to remain inside literature. Literature was a sort of continent which I unconsciously set in opposition to my social environment. And I conceived of writing as nothing less than the possibility of transfiguring reality.

– From the Nobel Lecture of Annie Ernaux, December 2022

Check out our Annie Ernaux Collection on
vasundharabooks.com

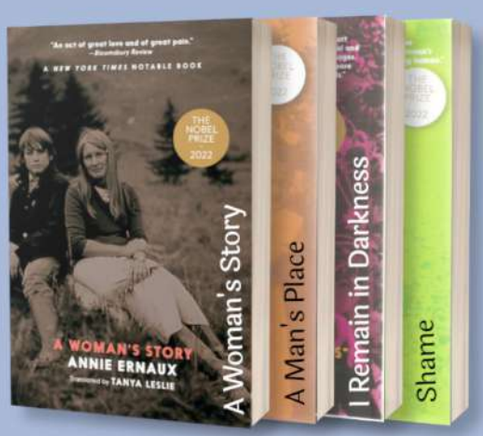

ऐनी एरनौ की पुस्तक 'एक औरत की कहानी' का *जितेन्द्र भाटिया* द्वारा हिंदी अनुवाद पढ़िए पत्रिका *'कथादेश'* के अप्रैल, मई और जून 2023 अंकों में!

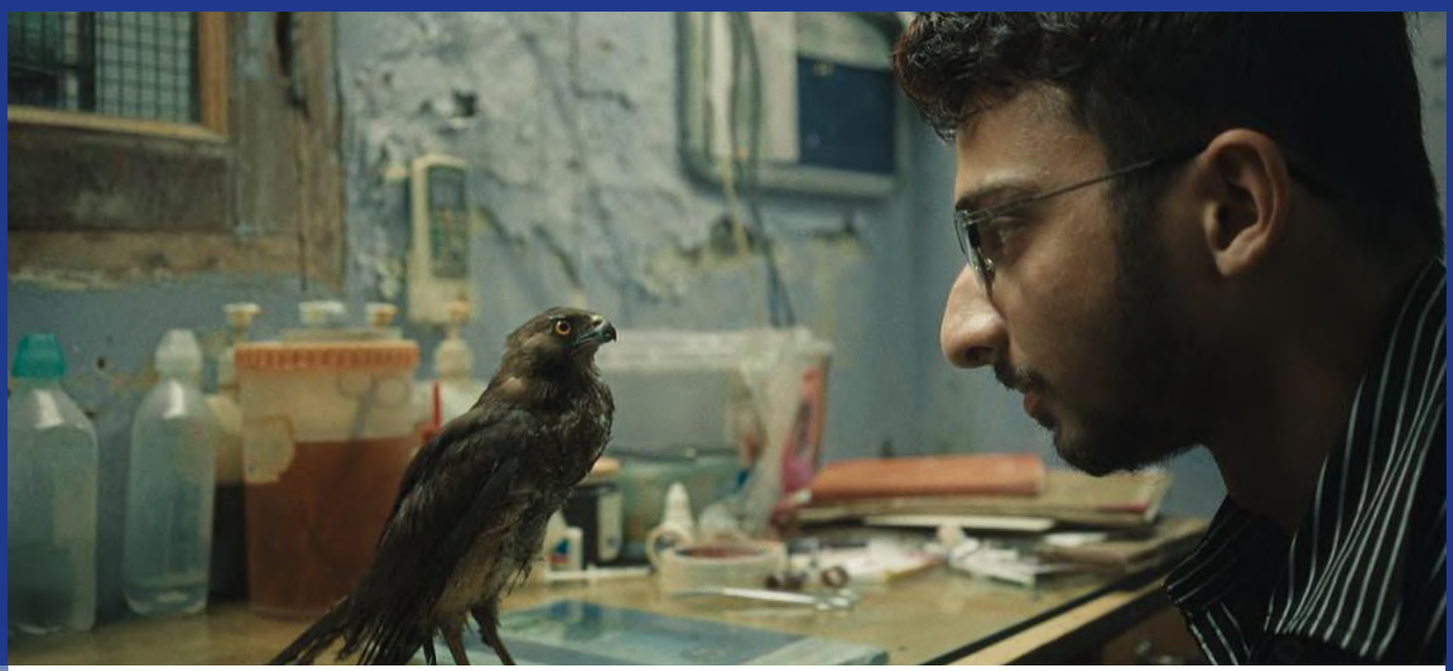

वसुंधरा मंच में हम कलात्मक फिल्मों का नियमित प्रदर्शन करते हैं।

(सदस्यता के लिए हमसे सम्पर्क करें।)

अप्रैल 2023 में दिखाई गई फिल्म

All That Breathes

All That Breathes एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म है जो आखिरी राउंड तक पहुंची लेकिन पुरस्कृत नहीं हो पाई। यह चील और इस बहाने से पक्षियों को बचाने की कहानी है जिसमें पर्यावरण शामिल है लेकिन यह सिर्फ पक्षियों अथवा चील को बचाने की कहानी नहीं है बल्कि कुछ और भी है। पुरानी दिल्ली में दो मुसलमान भाइयों - नदीम और सऊद - पर केंद्रित है। नदीम और सऊद वाइल्डलाइफ रेस्क्यू के संस्थापक हैं। उनके इलाके में एक पक्षियों का अस्तपाल भी है जो चीलों के मांसाहारी होने के कारण उनका इलाज नहीं करते। ऐसे में साबुन बनाने का काम करने वाले नदीम और सऊद ने घायल चीलों को बचाने में अपना जीवन खपा दिया। मनुष्यता से भरा यह अद्भुत दृश्य शुरु में ही है। जिसमें शाम के वक्त झील के एक ओर खड़े नदीम, सऊद और सालिक को दूसरी ओर घायल चील का पता चलता है। जिसे साँपों के डर के बावजूद वे नाव के अभाव में तैरकर इलाज के लिए घायल चील को लेकर आते हैं। फिल्म में पार्श्व में लोकतंत्र को बचाने के आंदोलनों की भी आवाज़ें आती रहती हैं। छीजते लोकतंत्र और राष्ट्रराज्य का धर्म केंद्रित व्यवहार दोनों आमने - सामने दिखने लगते हैं। पूरी फिल्म लोकतंत्र के क्षरण, मनुष्य, मनुष्यता के संकट और परिवेश के प्रदूषण का रूपक बन जाती है। यह फिल्म सतह पर बिल्कुल शांत है लेकिन सतह के नीचे अपार बेचैन हलचलों से भरी है। यह बहुअर्थगर्भी डॉक्यूमेंट्री है।

फिल्म का एक वाक्य अत्यंत मानीखेज है - 'दिल्ली की हवा बदल रही है और हाजमा भी।'

- विशाल विक्रम सिंह

राजस्थान विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापन

वसुंधरा मंच

☆ आगामी सूचना ☆

17 अप्रैल 2023 को लेखक पंकज सुबीर से उनके उपन्यास **रुदादे-सफ़र** पर वसुंधरा सदस्यों की अनौपचारिक चर्चा ।

"While reviewing the good movies seen this year, I realize the impact Vasundhara has had. The notables in the list: Where is the friend's home, Katyar Kaljat Ghusali , I, Daniel Blake, Capernaum, Khamosh Paanii, Poetry, Hillary, Filmistan, A Separation

Sincere gratitude to Vasundhara team for this selfless act of love."

- Ajay Goel (Vasundhara Manch Member)

"वसुंधरा मंच अच्छी फ़िल्में दिखा कर हमें देश-विदेश की कला, संस्कृति और विश्व भर के मानवीय व्यवहार से रूबरू करवाता हैं। "

- रेणु जुनेजा (वसुंधरा मंच सदस्या)

विश्व कविता : सम्पादक वंशी माहेश्वरी

तीन खण्डों में 33 देशों, 28 भाषाओं और 103 कवियों की कविताएँ, हिंदी के श्रेष्ठ 48 कवियों द्वारा हिंदी में अनूदित कुल 1500 से अधिक पृष्ठ: पहला खंड: दरवाज़े में कोई चाबी नहीं; दूसरा खंड: प्यास से मरती एक नदी, तीसरा खंड: सूखी नदी पर खाली नाव।

विश्व कविता का हिंदी में अनूदित यह सबसे बड़ा संचयन है।

~~₹ 1380~~
Only
₹ 1100

इस संकलन के साथ जनवरी 2023 की 'कथादेश' पत्रिका मुफ़्त पाएं।

~~₹ 70~~
Free

+

For more Collections and Special Offers, Visit our Website.

vasundharabooks.com

20% OFF On all **Hardcover** Books

ऑफर अप्रैल माह तक~
हर हार्डकवर संकलन के साथ **विनोद कुमार शुक्ल** पर केंद्रित 'कथादेश' विशेष पत्रिका मुफ़्त प्राप्त करें!

किताबें सीधे आपके दरवाजे पर मंगवाने के लिए अभी
82094 51655 WhatsApp करें।

For more offers and latest collections, please search *'Jan Vasundhara Sahitya Foundation'* on

सोचो साथ क्या जाएगा

लेखक : जितेन्द्र भाटिया

विषयों से इतर ये चारों खंड कुछ अहम प्रश्न भी उठाते हैं। क्या 21वीं सदी के दो दशक बिता चुके, तकनीकी 'समृद्धि' से संपन्न मनुष्य का साथ हाथ से लिखे शब्द बहुत देर तक दे पाएँगे? लेकिन शब्दों के प्रति आस्था ही है, जिसने इन खंडों के शीर्षक ' सोचो, साथ क्या जाएगा' को जन्म दिया।

इस संकलन के साथ जनवरी 2023 की 'कथादेश' पत्रिका मुफ़्त पाएं।

~~₹ 70~~
Free

+

~~₹ 1050~~
Only
₹ 1000

'वसुंधरा समाचार' -- जन वसुंधरा फाउंडेशन का मासिक मुखपत्र (केवल सदस्यों के लिए) (For private circulation only)
संयोजन और सम्पादन -- *चेतना शर्मा* मुम्बई प्रतिनिधि -- *रेखा जिन्दे* लेआउट -- *सागर कोवे*